वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 277

दशलक्षण धर्म पूजा

–रचयित्री–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

– प्रकाशक –
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943

चतुर्थ संस्करण	फाल्गुन शु. चतुर्दशी	मूल्य
2200 प्रतियाँ	18 मार्च 2011	10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
–: निर्देशन :–
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज
–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

अनादिनिधन दशलक्षण पर्व जैनधर्म में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह पर्व वैसे तो वर्ष में तीन बार आता है लेकिन भाद्र माह में शुक्ला पंचमी तिथि से अनंत चतुर्दशी तक आने वाले दशलक्षण पर्व को मनाने की परम्परा समाज में प्राचीन समय से प्रचलित है। इस पर्व के अन्तर्गत जैनधर्म में बतलाये गये उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य इन दस धर्मों का गुणगान किया जाता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अक्सर कहा करती हैं कि पंचमकाल में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से बढ़कर कोई भी कार्य श्रेष्ठ नहीं है। यही कारण है कि पूज्य माताजी ने तीर्थंकर भगवन्तों के प्रति अकाट्य भक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर बड़े-छोटे पूजा विधानों

की रचना की तथा ग्रंथों का सृजन किया। पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों के कारण ही आज समाज में लगातार कहीं न कहीं कोई न कोई विधान सम्पन्न होते रहते हैं। इससे समाज को पुण्यार्जन एवं धर्माराधना का अद्भुत स्रोत प्राप्त हुआ है।

पूजा-विधानों की शृँखला में ही कई वर्ष पूर्व पूज्य माताजी ने दशधर्म पर आधारित भावपूर्ण पूजा की रचना की है। इस लघु पुस्तक का प्रकाशन करते हुए अत्यन्त हर्ष है, भक्तजन दशलक्षण पर्व में इस पूजा को करके अपनी आत्मा को विशुद्ध बनायेंगे तथा अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करेंगे, यही भावना है।

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस– ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत आचार्यश्री के 91वें मुनिदीक्षा दिवस-फाल्गुन शु. 14 के अवसर पर प्रकाशित

आद्य वक्तव्य

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज में अनेक वर्षों से कविवर द्यानतराय द्वारा रचित दशलक्षण धर्म की पूजा करने की परम्परा चली आ रही है उसमें यद्यपि बहुत रहस्य भरा है किन्तु पिछले लगभग 30 वर्षों से अनेक भक्त श्रावक-श्राविकाओं द्वारा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पास विषय आया कि दशलक्षण पूजा में ब्रह्मचर्य धर्म के अर्घ्य की निम्न पंक्तियों में आप कुछ संशोधन कर दीजिए-

कूरे तिया के अशुचि तन में, कामरोगी रति करें।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विषबेल नारी, तजि गये योगीश्वरा।
द्यानत धरम दस पैंडि चढ़के, शिवमहल में पग धरा।।

अर्थात् जब मंदिर में पूजन की इस पंक्ति के माध्यम से पुरुषों को कौआ और महिलाओं को विषबेल कहा जाता है तब अनेक पुरुषगण महिलाओं को और महिलाएँ पुरुषों को बड़ी हीन दृष्टि से देखने लगते हैं तथा जब अनादिकाल से तीर्थंकर आदि महापुरुषों ने भी गृहस्थ धर्म स्वीकार किया है, तो लेखक को इतने कटु शब्द पूजन की पंक्तियों में नहीं रखना चाहिए था।

पूज्य माताजी यह सब सुनकर कहने लगीं कि वास्तव में पूजन तो श्रावक-श्राविकाएँ ही करते हैं उसमें ऐसा नहीं कहना चाहिए, किन्तु किसी लेखक की कृति में कोई परिवर्तन, परिवर्द्धन या संशोधन करना मेरी दृष्टि में उचित नहीं है। इसीलिए उन्होंने 25 वर्ष पूर्व एक नई पूजन बनाई, जिसमें ब्रह्मचर्य धर्म का अर्घ्य दृष्टव्य है–

मुनिगण पूर्ण ब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के भरतारी।
श्रावक एकदेश पालें, शीलव्रती बन यश पालें।।
सीता के व्रत शील भले, अग्नि हुई जल कमल खिलें।
सेठ सुदर्शन शीलव्रती, शूली से सिंहासन भी।।

देखो! इन पंक्तियों को पढ़ते-पढ़ते सहज ही महासती सीता और सेठ सुदर्शन के कथानक पर ध्यान चला जाता है जिससे हर श्रावक-श्राविका के अन्दर शीलव्रत पालन की प्रेरणा जागृत होती है।

इसी भावना को लेकर यह ''दशलक्षण धर्म पूजा'' कई बार जम्बूद्वीप पूजांजलि आदि पुस्तकों में प्रकाशित की जा चुकी है, अब पुनः विद्वानों की मांग के अनुसार यह लघु पुस्तिका प्रकाशित हो रही है। आप सभी श्रद्धालु भक्तजन दशलक्षण पर्व में इस पूजन को करके धर्म के सार को ग्रहण करें, यही मंगलकामना है।

दशलक्षण पूजा

-गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

-स्थापना (शंभु छंद)-

तीर्थंकर मुख से प्रगटे ये, दशलक्षण धर्म सौख्यकारी।
ये मुक्तिमहल की सीढ़ी हैं, सब जन मन को आनंदकारी।।
वर क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग तथा।
आकिंचन ब्रह्मचर्य उत्तम इन पूजत मिटती सर्व व्यथा।।1।।

-दोहा-

उत्तम दशविध धर्म ये, धरें सूर्य सम तेज।
आह्वानन विधि से जजूँ, खिले स्वगुण पंकेज।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्म समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्म समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-

मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्म समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक (चौबोल छंद)-

पद्माकर का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभावमल धोवन कारण, धार करूँ मनकंज खिला।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़े।
जिनगुण पूजन से नश जाते, कर्मशत्रु भी बड़े-बड़े।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति भरें।
अमृत कण सम निज समकित गुण, पाऊँ अतिशय शुद्ध खरे।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात बकुलादि खिले।
कामवाणविजयी जिनवल्लभ, चरण जजत नवलब्धि मिले।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनवर के गुण पूज किये।।

दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से करते गुण पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भाव कर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरें।
नव क्षायिक लब्धि फल इच्छुक, पूजूँ जिनगुणमपी खरे।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतू, तुम गुणगण को अर्घ किया।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवाम्बुधि तीर, जिनवर पद धारा करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती फूल, सुरभित निजकर से चुनें।
सब सुख हों अनुकूल, तुम गुण पंकज पूजतें।।11।।

पुष्पांजलिः।।

पृथक्-पृथक् पूजा (अर्घ)

-दोहा-

स्वात्म धर्म पीयूष की, निर्झरणीमय गंग।
इसमें अवगाहन करूँ, धुले कर्ममल जंग।।1।।

।। इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चाल-भक्तामर मंगल गीता)

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।

उत्तम क्षमा सुधाम्बुधि है, वैरशमन की औषधि है।
सर्व सौख्य की खान कही, सर्वजनों को मान्यरही।।2।।

क्रोध कषाय महाविष है, भव भव में दुखदायक है।
वैर भाव मन में धरते, कमठ समान शत्रु बनते।।3।।

क्षमा भाव मन में धारें, द्वेष कलह सब परिहारें।
पार्श्वनाथ के गुण गावें, श्रेष्ठ उदाहरण अपनावें।।4।।
क्षमा निजात्मा का गुण है, क्रोध भाव अग्नी कण है।
क्षमा पूर्ण शीतल जल है, सभी गुणों में उज्ज्वलहै।।5।।
ऐसे पावन क्षमाधर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
समरस हेतू क्षमाधर्म को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।
उत्तम मार्दव निजगुण है, मान महाविष दुर्गुण है।
विनय मुक्ति का द्वार कहा, सर्वगुणों का सार कहा।।2।।
दर्शन ज्ञान चरित तप में, इनके धारक गुरुजन में।
विनय भाव जो धरते हैं, निजगुण संपत्ति लभते हैं।।3।।
गुरु की विनय सदा करते, वे उपचार विनय धरते।
अठ विध मद को परिहरते, सबके सहज मित्र बनते।।4।।

रावण अर्धचक्रि मानी, अपयश से की निज हानि।
नरक धरा में दुख भोगे, विनयी नर सुर सुख भोगें।।5।।
ऐसे पावन मार्दव को हम, हृदय कमल में ध्याते हैं।
कोमलतामय स्वात्मधर्म को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दव-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।
उत्तम आर्जव ऋजुता है, मन वच काय सरलता है।
सरल भाव से ऋजुगति है, ऋजुगति से ही शिवगति है।।2।।
माया से तिर्यग्गति है, कुटिल वृत्ति दुर्गतिप्रद है।
मृदुमति मुनि ने कपट किया, हाथी बनकर दुखित हुआ।।3।।
काष्ठांगार छद्मबल से, अतिविश्वासघात करके।
सत्यंधर नृप को मारा, खुद को दुर्गति में डारा।।4।।
माया में सब दुर्गुण हैं, सरलभाव में सद्गुण हैं।
आर्जव गुण की पूजा से, स्वात्मशुद्ध हो कर्म नशें।।5।।

ऐसे उत्तम आर्जव गुण को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
स्वात्म सौख्य की प्राप्ति हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआर्जव-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम सत्यधर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
उत्तम सत्यवचन बोलो, श्रुतसम्मत प्रशस्त बोलो।
झूठ बराबर पाप नहीं, जहाँ सांच वहाँ आंच नहीं।।2।।
निंदा चुगली बैर वचन, कर्कश गर्हित पाप वचन।
सब असत्य के परिकर हैं, सब दुर्गति के किंकर हैं।।3।।
झूठ पक्ष से वसु नृप के, हिंसा यज्ञ चला तब से।
नृप का सिंहासन धसका, नृपति नरक में जाय बसा।।4॥
सत्य सौख्यप्रद सुन्दर है, सत्य वचन जग हितकर है।
सत्यवचन से वाक् सिद्धी, हो निज की भी उपलब्धी।।5।।
शिवप्रद उत्तम सत्यधर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
निजगुणसंपत्ती के हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसत्य-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम शौच धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
शुचि का भाव शौच जानो, लोभ पाप की खनि मानो।
जो मन में संतोष धरें, वे ही मन की शुद्धि करें।।2।।
जल आदिक से शुद्धि कही, वह बहिरंग शुद्धि सच ही।
श्रावक जन नित ही करते, साधु कदाचित् भी करते।।3।।
मलिन देह न स्नान करें, रत्नत्रय से शुद्धि धरें।
साधु अमल गुणधारी हैं, ज्ञानगंग अवगाही हैं।।4।।
अति अपवित्र इसी तन से, जप तप ज्ञान शील व्रत से।
शुचि पवित्र आत्मा प्रगटे, परमात्मा होकर चमके।।5।।
ऐसे पावन शौच धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
स्वात्मविशुद्धि हेतु भक्ति से, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमशौच-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम संयम रत्न प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
त्रस स्थावर जीव कहे, ये षट् जीव निकाय रहें।
इनकी रक्षा करना ही, प्राणी संयम धरना ही।।2।।

पंचेन्द्रिय मन वश करना, इन्द्रिय संयम चित धरना।
यह बारह विध संयम है, मुनिगण का ही जीवन है।।3।।
जीव भरें इस तिहुंजग में, सावधान मुनि नहिं बंधते।
श्रावक एकदेश पालें, संकल्पी त्रसवध टालें।।4।।
नरगति में ही संयम है, नरभव सफल करो जन है।
चिन्मय ज्योति प्रगट करें, पूर्ण ज्ञान आनंद भरे।।5।।
संयम चिंतामणि रत्न को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
तीर्थंकर भी धरें इसे, हम हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसंयम-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम बारह तप प्रगटित हों, यही भावना भाते हैं।।1।।
अनशन आदि बाह्य तप षट्, अंतरंग तप भी हैं षट्।
ये कर्मेधन भस्म करें, स्वर्ग मोक्ष के सौख्य भरें।।2।।
सुरगण नरभव को तरसें, तप को चाहें शिवरुचि से।
नरक स्वर्ग तिर्यग्गति में, तप नहिं यह तप नरभव में।।3।।

तप से काय भले कृश हो, आत्मशक्ति बढ़ जाय अहो।
ऋद्धि सिद्धियाँ प्रगटित हों, तीर्थंकर भी धरें अहो।।4।।
नरक निगोदों का यदि भय, संयम तप धारो निर्भय।
श्रावक भी तप करते हैं, भववारिधि से तरते हैं।।5।।
ऐसे पावन उत्तमतप को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
कर्मनिर्जरा हेतू तप को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमतपो-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम त्याग धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
मुनिरत्नत्रय दान करें, प्रासुक त्याग इसे उचरें।
इससे ही शिवमार्ग चले, चतुः संघ हों भले भले।।2।।
दान चतुर्विध माना है, श्रावकधर्म बखाना है।
त्रिविध पात्र हित दान कहा, औषधि शास्त्र आहार महा।।3।।
अभयदान जिनवर करते, मुनि-श्रावक भी तो करते।
जीवनदान महाना है, आर्षग्रंथ में माना है।।4।।

निज को निज में पा करके, ज्ञान निधी को ला करके।
सब विभाव का त्याग करो, निजस्वभाव को प्राप्त करो।।5।।
चउविध उत्तमत्याग धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
रत्नत्रय निधि पूर्ण प्राप्त हित, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्याग-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
आकिंचन्य धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
किंचित् मेरा नहीं यही, आकिंचन्य धर्म शुभ ही।
चौबिस भेद परिग्रह हैं, पूर्ण त्यागते मुनिवर हैं।।2।।
श्रावक धन परिमाण करें, अणुव्रत धर सुर सौख्य भरें।
नग्न दिगम्बर मुनि ज्ञानी, नग पर तिष्ठें शुचि ध्यानी।।3।।
समरस सौख्य सुधास्वादी, हरते जनम मरण व्याधी।
जिनकल्पी मुनि एकाकी, शुद्धात्मा के अनुरागी।।4।।
आज मुनी संघ में रहते, ज्ञान ध्यान तपरत रहते।
इन्हें स्थविरकल्पि मानों, धन्य दिगम्बर गुरु जानो।।5।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
पूर्ण अकिंचन बनें इसी से, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआकिंचन्य-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम ब्रह्मचर्य प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
ब्रह्मचर्य व्रत तिहुं जग में, सुरनर पूजित है सच में।
एक अंक बिन बिंदू की, नहिं गणना कुछ हो सकती।।2।।
एक अंक पर बिंदु अनेक, कोटि अरब संख्या के हेतु।
ब्रह्मचर्य व्रत ऐसा है, गुण अनंत भर देता है।।3।।
मुनिगण पूर्ण ब्रह्मचारी, मुक्ति वधू के भरतारी।
श्रावक एकदेश पालें, शीलव्रती बन यश पालें।।4।।
सीता के व्रत शील भले, अग्नि हुई जल कमल खिलें।
सेठ सुदर्शन शीलव्रती, शूली से सिंहासन भी।।5।।
स्वात्मसौख्यकृत ब्रह्मचर्य को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
परमानंद मोक्ष पद हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्य-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य (नरेन्द्रछंद)-

स्वात्मशांति कर सर्वहितंकर, ये दर्शधर्म कहाते हैं।
मुनिगण इन पर क्रम से चढ़कर, परमामृत सुख पाते हैं।।
श्रावक एकदेश पालन कर, बहुविध सुख भंडार भरें।
पूरण अर्घ चढ़ाकर पूजें, सब दुख शोक दरिद्र हरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमादि-दशधर्मेभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

दशलक्षणवृष कल्पतरु, सब कुछ देन समर्थ।
गाऊँ गुणमणिमालिका, फलें सर्व इष्टार्थ।।1।।

-शंभुछंद-

जय उत्तम क्षमा शांतिकरणी,
निज आत्मसुधानिर्झरणी है।

जय उत्तम मार्दव स्वाभिमान,
समरस परमामृत सरणी है।।
जय उत्तम आर्जव मन वच तन,
एकाग्ररूप निजध्यानमयी।
जय उत्तम सत्य दिव्यध्वनि का,
हेतू है भविजन सौख्यमयी।।2।।
जय उत्तम शौच निजात्मा को,
शुचि पावन कर शिवधाम धरे।
जय उत्तम संयम गुणरत्नों से,
पूर्ण परमनिजधाम करे।।
जय उत्तम तप आत्मा को नित्य,
निरंजन अनुपम पद देता।
जय उत्तम त्याग रत्नत्रय निधि से,
निज आत्मा को भर देता।।3।।
जय उत्तम आकिंचन आत्मा को,
त्रिभुवनपति पद देता है।
जय उत्तम ब्रह्मचर्य निज में,
निज को स्थिर कर देता है।।

जय जय दशलक्षण धर्म,
निजात्मा के अनंतगुण देते हैं।
चौरासी लाख योनियों के,
परिभ्रमण दूर कर देते हैं।।4।।
निश्चयनय से यह आत्मा तो,
रस-गंध-वर्ण-स्पर्श रहित।
नर-नारक आदि गती विरहित,
संस्थान गुणस्थानादि रहित।।
यद्यपि भव पंच परावर्तन यह,
काल अनंतों से करता।
फिर भी निश्चय से यह आत्मा,
है सिद्ध समान सौख्य भरता।।5।।
व्यवहार नयाश्रित आत्मा तो,
कर्मों से युत संसारी है।
शारीरिक मानस आगंतुक,
नाना दुःखों का धारी है।।
भव-भव के जन्म-मरण दुःखों को,
व्याकुल होकर भोग रहा।
फिर भी यह चिच्चैतन्यमयी,
आत्मा के गुण को खोज रहा।।6।।

हे नाथ! आपके चरणों में,
हम यही प्रार्थना करते हैं।
समकित निधि संयमनिधी मिले,
बस यही याचना करते हैं।।
व्यवहार नयाश्रित भक्ती से,
दशधर्म कमल विकसित कीजे।
निश्चयनय से निज में तिष्ठूँ,
ऐसी शक्ती मुझको दीजे।।7।।

-दोहा-

गुण अनंत मंडित प्रभो! करो हृदय में वास।
केवल ज्ञानमती मिले, जो अनंतगुण राशि।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

दशलक्षण वरधर्म को, जो पूजें धर प्रीति।
आत्यंतिक सुख शांति लें, यही जिनागम रीति।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

पर्व दशलक्षण आया है-2,
भक्तों ने प्रभु की भक्तिसे अपना, उपवन सजाया है।। पर्व.।।
दशलक्षण का ये बगीचा, कितना सुन्दर लगता है।
भादों शुक्ला पंचमि से, चौदस तक यह सजता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।1।।
कर्मों की विलक्षण गति है, ये सबको नाच नचाते।
इनसे मुक्ती पाने की, युक्ती ये धर्म बताते।।
पर्व दशलक्षण आया है।।2।।
यह पर्व क्षमागुण का शुभ, संदेश लिए आता है।
भव-भव के वैर भुलाकर, मैत्री को सिखलाता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।3।।
मेरे आतम में भी प्रभु, ये धर्म दशों बस जावें।
पारस प्रभु सम कष्टों में, भी धैर्य हृदय बस जावे।।
पर्व दशलक्षण आया है।।4।।
यह धर्म कल्पतरु मुझको, सौभाग्य से प्राप्त हुआ है।
''चन्दनामती'' नरभव का, अब सच्चा ज्ञान हुआ है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।5।।

उत्तम क्षमा धर्म का भजन

तर्ज-आवाज देकर.....

क्षमा धर्म से अपनी बगिया सजाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।
न क्रोधी प्रकृति आत्मा की कही है।
वहाँ तो सदा शान्ति सरिता बही है।।
नहीं क्रोध कर अपनी गरिमा घटाओ।
गुणों की सुरभि.....।।1।।
हो यदि कोई दुश्मन तुम्हारा जगत में।
उसे जीत सकते हो तुम प्रेम बल से।।
सहनशीलता धैर्य शक्ती बढ़ाओ।
गुणों की सुरभि.....।।2।।
प्रभु पार्श्व ने ही क्षमा धर्म पाला।
इसे धार ऋषियों ने उपसर्ग टाला।।
उन्हीं सबके चरणों में मस्तक झुकाओ।
गुणों की सुरभि.....।।3।।
करूँ प्रार्थना प्रभु मुझे भी क्षमा दो।
प्रभो! मेरे मन को भी चन्दन बना दो।।
यही भावना ''चन्दनामति'' बनाओ।
गुणों की सुरभि.....।।4।।

उत्तम मार्दव धर्म का भजन

धर्म मार्दव को सब मिल निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।

मान मानव का गुण बन गया है,
जब कि अवगुण ही उसको कहा है।
अवगुणों को हृदय से हटाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। धर्म मार्दव.।।1।।

इस अहं ने ही सबको ठगा है,
इन्द्रिय विषयों में ही मन लगा है।
सोच अब मन को विनयी बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। धर्म मार्दव.।।2।।

ज्ञानियों की विनय करना सीखो,
संयमी की विनय करना सीखो,
संयमी बनके संयम निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। धर्म मार्दव.।।3।।

फल सहित वृक्ष झुकता सदा है,
ऐसे ही गुण सहित मन कहा है।
मन का उपवन गुणों से सजाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। धर्म मार्दव.।।4।।

विनय विद्या प्रदाता कही है,
ऋद्धि सिद्धी की दाता वही है।
"चन्दनामति" हृदय मृदु बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। धर्म मार्दव.।।5।।

उत्तम आर्जव धर्म का भजन

तर्ज-दिन रात मेरे स्वामी.....

हे नाथ! आपसे मैं, वरदान एक चाहूँ। वरदान.....
ऋजुता हृदय में लाकर, आर्जव धरम निभाऊँ। आर्जव.....

ना जाने क्यों कुटिलता का भाव आ ही जाता।
हे प्रभु! उसे हटा कर समता का भाव लाऊँ।। समता का...।।1।।

माया में फंसके मैंने मानव जनम गंवाया।
अनमोल इस रतन को अब ना गंवाने पाऊँ।। अब ना....।।2।।

यह भी सुना है माया से पशुगती है मिलती।
उस पशुगती में हे प्रभु! अब मैं न जाना चाहूँ।। अब मैं....।।3।।

शायद अनादिकालिक संस्कार संग लगे हैं।
मैं चाहकर भी हे प्रभु! उनसे न छूट पाऊँ।। उनसे न....।।4।।

यह पुण्य कर्म ही जो गुरु देशना मिली है।
फिर 'चन्दनामती' मैं, मन में उसे बिठाऊँ।। मन में....।।5।।

उत्तम शौच धर्म का भजन

तर्ज-जिस गली में.....

जिस गती में न उत्तम धरम मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।
जिस मती से धरम शौच पल ना सके,
उस मती को भी हे नाथ! पाना नहीं।।टेक.।।
हीरा सा यह मनुज तन मिला आज है।
लोभ में ही गया यदि तो क्या लाभ है।।
लोभ में ही गया यदि.....
जिस गती में धरम लाभ ना मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।।1।।
कुछ तो सीमा करो अपनी इच्छाओं की।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी निजात्मा में भी।।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी.....
लोभ का त्याग पूरा भी कर ना सको,
तो भी ज्यादा उसी में लुभाना नहीं।। जिस....।।2।।
लोभवश चक्रवर्ती नरक में गया।
भरत सम्राट् ने तज उसे शिव लहा।।
भरत सम्राट् ने तज.....
'चन्दनामति' जहाँ लक्ष्य की पूर्ति हो,
रत्नत्रय धारकर मुझको जाना वहीं।। जिस....।।3।।

उत्तम सत्य धर्म का भजन

तर्ज-झिलमिल सितारों का.....

सत्य धरम जब पालन होगा, पापों का प्रक्षालन होगा।
इसका पालन वचन सिद्धि का साधन होगा।। सत्य धरम.।।

जाने कितने झूठ भी मैंने, जनम जनम में बोले हैं।
स्वार्थसिद्धि के कारण अपने, वचन न मैंने तोले हैं।।
अब उन सबका क्षालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।।सत्य.।।1।।

बहुत से विषकण मिलकर जैसे, अमृत नहिं बन सकते हैं।
कई झूठ मिल कर वैसे ही, सत्य नहीं बन सकते हैं।।
धर्म सदा अमृत सम होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।2।।

साधू उत्तम सत्य वचन को, पूर्णरूप से धरते हैं।
श्रावक भी सच्चाई का, आंशिक पालन कर सकते हैं।।
अतः झूठ वच टालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।3।।

राजा वसु ने झूठ बोलकर, अधोगती को प्राप्त किया।
सत्य बोलने वालों ने ''चन्दना'' ऊर्ध्वगति प्राप्त किया।।
धर्म सदा मन भावन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।4।।

उत्तम संयम धर्म का भजन

तर्ज-बाबुल की दुआएँ.....

उत्तम संयम के पालन से, मानव को शिव का द्वार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।
पारस मणि को पाना जैसे, दुर्लभ ही नहीं अतिदुर्लभ है।
वैसे ही संयमरूपी मणि को, पाना भी अति दुर्लभ है।।
यदि मिल जावे वह रत्न तो समझो, मोक्षपंथ साकार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।1।।

इन्द्रियसंयम-प्राणीसंयम से, संयम द्वैविध माना है।
इनका पालन करने वालों को, शिवपद निश्चित पाना है।।
श्रावक को भी किंचित् संयम, पालन से सुख आधार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।2।।

यदि संयम पालन कर न सको, निंदा न संयमी की करना।
उनकी पूजन आहार आदि से, निज आतम शुद्धी करना।।
''चन्दनामती'' संयम व संयमी, में ही सुख का सार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।3।।

उत्तम तप धर्म का भजन

तर्ज-हम लाए हैं तूफान से.....

हे वीतराग प्रभु! मुझे तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।
विपरीत अर्थ करके तप का पतित हो गया।
मैं क्षणिक सुख को भोग कर उसमें ही खो गया।।
हे नाथ! इन दुखों से मुझको मुक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।1।।

कन्या अनंगशरा ने तप किया था वनों में।
बन करके विशल्या दिखाई शक्ति क्षणों में।।
हे नाथ! मुझे भी वही तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।2।।

उत्तम तपो धरम से मुनी मोक्ष जाते हैं।
श्रावक भी करें तप यदी तो स्वर्ग पाते हैं।।
हे नाथ! 'चन्दनामती' ये युक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।3।।

उत्तम त्याग धर्म का भजन

तर्ज-तुमसे मिलने को.....

त्याग लेने का मन करता है।
हे प्रभो! त्याग लेने का मन करता है।।टेक.।।
भ्रान्तिवश मैंने शुभ कर्म को तज दिया।
विषय भोगों में ही अपना मन कर लिया।
उसे तजने का मन करता है।।हे प्रभो.।।1।।
त्याग की महिमा अब मैंने जानी प्रभो।
दान की गरिमा अब मैंने मानी प्रभो।।
दान देने का मन करता है।।हे प्रभो.।।2।।
देना आहार औषधि अभय दान भी।
ज्ञान का दान दे तजना अज्ञान भी।।
ज्ञान लेने का मन करता है।। हे प्रभो.।।3।।
साधु ही त्याग उत्तम धरम पालते।
आज भी वे परम शांति को धारते।।
शांति पाने को मन करता है।। हे प्रभो.।।4।।
दान देकर के श्रावक जनम धन्य हो।
''चन्दनामति'' मेरा मन भी धन धन्य हो।।
सुरभि लेने का मन करता है।। हे प्रभो.।।5।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म का भजन

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....

धर अकिंचन धरम, कर ले तू शुभ करम, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।
ना मे किंचन अकिंचन धरम है, पर को निज मानना ही भरम है।
तज दे मिथ्या भरम, पालते दश धरम, भव्य प्राणी।
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।1।।

पांच पापों में परिग्रह भी इक है, इसको मुनिवर न धरते तनिक हैं।
उनके पद में नमन, करके पावन हो मन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।2।।

इसका कुछ त्याग श्रावक भी करते, पांच अणुव्रत का पालन जो करते।
अणुव्रतों का कथन, जिनवरों का वचन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।3।।

व्रत सहित श्रेष्ठ मानव जनम है, व्रत रहित मन को रखना न तुम है।
व्रत से शिक्षा लें हम, 'चन्दनामति' है मन, सुनले प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।4।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म का भजन

तर्ज-दीदी तेरा.....

ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।
झुकता उसके आगे जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।टेक.।।
जो विषयों का त्यागी है आत्मा का रागी,
वही ब्रह्मचर्य सहित है विरागी!
महासाधुगण की निधी यह धरोहर,
वही इसके बल पर बनें वीतरागी।।
उनको जग ने पावन है माना, हे नाथ! कठिन है उसे पाना।।1।।
सती सीता ने इसका कुछ अंश पाला,
हुई शीलव्रत की परीक्षा विशाला।
बनी जल की सरिता वो अग्नी की ज्वाला,
सुदर्शन का भी व्रत ने उपसर्ग टाला।।
उनकी जय से गूंजा जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।2।।
मुझे भी प्रभो! इसका पालन करा दो,
मेरी आतमा को भी पावन बना दो।
विषयों से मुझको विरागी बना दो,
मुझे 'चन्दना' आत्मस्वादी बना दो।।
जिससे हो ना भव भव में आना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।3।

क्षमावणी पर्व का भजन

तर्ज-तीरथ कर लो पुण्य कमा लो.....

क्षमा गुण को मन में धर लो, क्षमा को वाणी में कर लो।
शत्रु-मित्र सबमें समता का, भाव हृदय भर लो।।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।टेक.।।
मैत्री का हो भाव सभी, प्राणी के प्रति मेरा।
गुणी जनों को देख हृदय, आल्हादित हो मेरा।।
वही आल्हाद प्रगट कर लो,
क्रोध वैर भावों को तजकर, मन पावन कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।1।।
चिरकालीन शत्रुता भी यदि, किसी से हो मेरी।
उसे भूलकर मित्रभावना, बने प्रभो! मेरी।।
भावना सदा सरल कर लो,
चन्दन सी शीतलता से, मन को शीतल कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।2।।
एक-एक ईंटों को चुनने, से मकान बनता।
एक-एक धागा बुनने से, परीधान बनता।।
यही क्रम गुण में भी धर लो,
एक-एक गुण से आत्मा को, परमात्मा कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।3।।
दश धर्मों के आराधन से, मृदुता आती है।
भावों में ''चन्दनामती'' खुद, ऋजुता आती है।।
रत्नत्रय को धारण कर लो,
पर्वों का इतिहास यही, जीवन में अमल कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।4।।

आरती दशलक्षण धर्म की

तर्ज–अरे रे.....

आरती थाल सजा के, रत्न का दीप जला के,
आरती करूँ मैं जिनराज की।।

दश-दशधर्म उत्तम क्षमा आदि हैं,
जिनका पालन करते महामुनि आदि हैं।
थोड़ा-थोड़ा भी जो पालन करें आज हैं,
वे भी प्राप्त करें क्रम से मुक्ति राज्य हैं।।
आरती थाल सजा के, रत्न का दीप जला के।। टेक.।।

क्रोध को घटा के क्षमा भाव रखना है,
मान को हटाके मृदु भाव करना है।
छोड़ दें कुटिलता तो ऋजु भाव हों,
सत्यता को पालें सदा झूठ त्याग हो।।
आरती थाल सजा के,.....।।1।।

लोभ को हटाके शौच धर्म पलेगा,
संयमी के द्वारा संयम धर्म चलेगा।

थोड़ा नियम लेके जो भी तप करेगा,
वही उत्तम त्याग धर्म धारण करेगा।।
आरती थाल सजा के,.....।।2।।

परिग्रह का त्याग आकिंचन्य धर्म है,
आत्मा में रमण उत्तम ब्रह्मचर्य है।
''चंदनामती'' जो इनसे सहित होते हैं,
उनकी आरती से सभी पाप धोते हैं।।
आरती थाल सजा के,.....।।3।।

आरती दशलक्षण धर्म की

तर्ज –बार-बार तुझे क्या समझाऊँ.....

दशधर्मों की आरति करके, होगा बेड़ा पार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।टेक.।।

आत्मा को दुख से निकालकर, जो सुख में पहुँचाता।
हर प्राणी के लिए वही तो, सच्चा धर्म कहाता।
उसी धर्म को धारण करके, होगा बेड़ा पार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।1।।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, धर्म कहे आत्मा के।
इनसे मैत्री विनय सरलता, प्रगटित हों आत्मा में।।
उत्तम सत्य व शौच धर्म से, होगा बेड़ा पार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।2।।

उत्तम संयम तप व त्याग, मुक्ती का मार्ग बताते।
इनको पालन करके मुनिजन, मुक्तिपथिक कहलाते।
हम भी इनका पालन करके, लहें मुक्ति का द्वार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।3।।

उत्तम आकिञ्चन्य धर्म, परिग्रह का त्याग कराता।
श्रावक को परिग्रह प्रमाण का, सरल मार्ग समझाता।।
उत्तम ब्रह्मचर्य तिहुँ जग में, है सब धर्म का सार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।4।।

पर्व अनादी दशलक्षण में, दश धर्मों को वन्दन।
इनकी आरति से हि ''चन्दनामती'' कटें भव बंधन।।
इसीलिए दश धर्म हृदय में, लिए हैं हमने धार।
धर्म के बिना इस जग में, कौन करेगा उद्धार।।5।।

दशलक्षण पर्व स्तुति

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

पर्वराज पर्यूषण जग में है अनादि अनिधन माना।
दशलक्षण के नाम से यह प्राचीन काल से है माना।।
जैसे एक एक सीढ़ी चढ़ महल पे पहुँचा जाता है।
वैसे ही दशधर्म पालकर मानव शिवपद पाता है।।1।।

भादों माघ चैत्र महिने में तीन बार यह आता है।
शुक्ला पंचमि से चौदश तक इसे मनाया जाता है।।
मलिन आत्मा को निर्मल करने हेतू यह आता है।
आत्म तत्त्व का सार समझने में निमित्त बन जाता है।।2।।

दशलक्षण व्रत के संग इसमें कई और व्रत आते हैं।
जो श्रद्धालु नर नारी द्वारा अपनाए जाते हैं।।
पहले पाँच दिनों तक पंचमेरु पुष्पांजलि व्रत आता।
श्री व्रत आकाशपंचमी अरु निर्दोष सप्तमी व्रत आता।।3।।

है निःशल्य अष्टमी एवं फिर सुगंध दशमी व्रत है।
पुनः द्वादशीव्रत करके करना सुन्दर अनन्त व्रत है।।
तेरह चौदस पूनों को रत्नत्रय व्रत पालन कर लो।
एकाशन उपवास आदि कर जिनवर का अर्चन कर लो।।4।।

दशलक्षण के नाम से दशधर्मों का सार समझना है।
शक्ती के अनुसार इन्हीं धर्मों को धारण करना है।।
उत्तम क्षमा धर्म के द्वारा क्रोध शत्रु पर विजय करो।
प्रथमाचार्य शांतिसागर मुनि का जीवन स्मरण करो।।5।।

क्षमा-शांति के द्वारा जिनने सर्प का विष भी शांत किया।
जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में मन नहिं भ्रान्त किया।।
मार्दव आर्जव सत्य शौच संयम तप त्याग ग्रहण कर लो।
उत्तम आकिंचन्य व उत्तम ब्रह्मचर्य पालन कर लो।।6।।

इन सबका उत्कृष्ट रूप में पालन मुनिवर ही करते।
श्रावक भी इन दशों धर्म का आंशिक पालन कर सकते।।
भाद्रमास में श्रावक जन अतिशय प्रभावना करते हैं।
सामूहिक पूजन विधान कर गुरु के प्रवचन सुनते हैं।।7।।

दशलक्षण व्रत की महिमा का सच्चा एक कथानक है।
धातकि खण्ड द्वीप के पूर्व विदेह का यह घटना क्रम है।।
राजा-मंत्री-सेठ और ब्राह्मण की चार सुताएं थीं।
धर्माराधना में तत्पर चारों की पुण्य कथाएं थीं।।8।।

चारों ने मिलकर एक बार वन में मुनिवर के दर्श किये।
गुरुवर के प्रवचन सुनकर सबने उनसे सुंदर प्रश्न किये।।

स्त्रीलिंग छेदने का मारग बतलाओ हे गुरुवर!
तब गुरु ने उनको बतलाया दशलक्षण का व्रत सुखकर।।9।।

मुनि की साक्षीपूर्वक चारों ने व्रत को स्वीकार किया।
व्रत प्रभाव से उन चारों ने दशम स्वर्ग को प्राप्त किया।।
वहाँ से आकर भरतक्षेत्र उज्जैन नगर में जन्म लिया।
मूलभद्र राजा की रानी को चारों ने धन्य किया।।10।।

चारों राजपुत्र ने दीक्षा धारण कर शिवपद पाया।
इस प्रकार दशलक्षण व्रत माहात्म्य जगत् को दिखलाया।।
यह दशलक्षण पर्व ''चन्दनामती'' बने मंगलकारी।
दश धर्मों का पालन करके हो जीवन सुखकारी।।11।।

तत्त्वार्थसूत्र भजन : समग्र

तर्ज –मेरा नम्र प्रणाम है.....

कोटीकोटि प्रणाम है,
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।
जिसका सार ग्रहण कर मानव, पाता आगमज्ञान है।।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को,कोटी कोटि प्रणाम है।।टेक।।

दश अध्यायों में जीवादिक, सात तत्त्व बतलाये हैं।
श्री आचार्य उमास्वामी ने, सूत्र सरल समझाये हैं।।
मोक्ष आज नहिं किंतु मोक्ष-मारग का मिलता ज्ञान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।।1।।

प्रथम चार अध्यायों में ही, जीवतत्त्व का वर्णन है।
रत्नत्रय ही मोक्षमार्ग का, करवाता दिग्दर्शन है।।
तीनलोक में चतुर्गती के, भ्रमण का करे बखान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।।2।।

तत्त्व अजीव का वर्णन है, पंचम अध्याय में सारभरा।
छठी और सप्तम में आश्रव, के द्वारा संसार कहा।।

बंध तत्व अष्टम अध्याय में, वर्णित जो दुखखान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।।3।।

संवर और निर्जरा का, वर्णन नवमीं अध्याय में।
तप संयम से कर्म निर्जरा, करो यही बस न्याय है।।
मोक्षतत्त्व के वर्णन में, दशवीं अध्याय प्रमाण है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।।4।।

इसीलिए इसके पढ़ने से, इक उपवास का फल मिलता।
अर्थ ''चंदनामती'' अगर, समझें तो आत्मकमल खिलता।।
ग्रंथों का संक्षिप्त सार, इस ग्रंथ में ही विद्यमान है।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र को, कोटी कोटि प्रणाम है।।5।।

प्रथम अध्याय का भजन

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

संसार दुखों से घबराकर, इक मानव हितपथ ढूंढ़ रहा।
निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरु को लख-कर प्रश्न एक वह पूछ रहा।।
आत्मा का हित कैसे होता, कैसे प्राणी निजसुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

रत्नत्रय ही है मोक्षमार्ग, जो आतमसुख का कारण है।
गुरु कहते इससे ही होता, दुःखों का सहज निवारण है।।
पाँचों ही सम्यग्ज्ञानों से, मानव सच्चा सुख पा जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

मति श्रुत अवधि ये तीन ज्ञान, मिथ्यात्वरूप भी होते हैं।
सम्यक्त्व सहित ''चंदनामती'', ये मोक्ष प्राप्ति में हेतू हैं।।
तत्त्वार्थसूत्र अध्याय प्रथम में, यही सार गुरु समझाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

द्वितीय अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

हैं जीव तत्व के पाँच भाव, जो आत्मा में ही होते हैं।
औदयिक पारिणामिक उपशम, क्षय और क्षयोपशम होते हैं।।
संसारी-मुक्त सभी जीवों में, यथाशक्ति पाये जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

चौरासी लाख योनियों में, यह जीव जनम कैसे लेता।
सुख-दुख अनुभव के साथ सदा, इन्द्रिय विषयों में रस लेता।।
औदारिक आदि शरीरों से, अशरीरी तभी न बन पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

कुछ कारणवश तिर्यञ्च मनुज का, मरण अकाल भी हो सकता।
नहिं देव नारकी भोगभूमि, अरु मोक्षगामि के हो सकता।।
''चंदनामती'' तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय द्वितीय में ये बातें।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

तृतीय अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

आचार्य उमास्वामी तृतीय, अध्याय में ऐसा कहते हैं।
पापों के करण जीव नरक, आदिक दुःखों को सहते हैं।।
हैं मध्यलोक में मनुज और, तिर्यंच जीव यह बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

है द्वीप समुद्रों में वर्णित, भूगोल जैन जाना जाता।
साकाररूप उसका तीरथ, हस्तिनापुरी में दिख जाता।।
वहाँ जम्बूद्वीप व तेरहद्वीप के, दर्शन कर सब हरषाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

कुछ विज्ञ इसे निःसार समझ, समुचित वर्णन नहिं करते हैं।
पर ज्ञानमती जी के प्रवचन, उन पर भी अनुग्रह करते हैं।।
''चंदनामती'' गुरुजन भी इस, अध्याय का महिमा बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

चतुर्थ अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र अध्याय चतुर्थ में, ऊर्ध्वलोक का वर्णन है।
देवों के चार भेद एवं, उनकी स्थिति का वर्णन है।।
वे भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक नामसे कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

चन्द्रमा सूर्य नक्षत्रादिक हैं, ज्योतिर्वासी देव कहें।
इनके विमान मेरूपर्वत की, सदा-सदा परिक्रमा करें।।
बस इसीलिए रात्री दिन के हैं, भेद धरा पर बन जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

यद्यपि चारों गतियों में, देवगती में सर्वाधिक सुख है।
पर संयम नहिं ले सकते वे, इस बात का ही उनको दुख है।।
''चंदनामती'' वह संयम तप, बस मानव धर शिवपद पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

पंचम अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक।।

है जीव से भिन्न अजीव तत्व, जो पाँच भेद युत कहलाता।
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल से, उसको पहचाना जाता।।
इनमें से बस पुद्गल मूर्तिक, अरु पाँच अमूर्तिक कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

गागर में सागर के समान, तत्त्वार्थसूत्र की रचना है।
इसकी पंचम अध्याय में गुरुवर, उमास्वामी का कहना है।।
ज्ञानी इन सबको पृथक् समझ, निज आतम अनुभव कर पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

परमाणु और स्कन्धों में, पुद्गल की शक्ति समाहित है।
आधुनिक आज युग में पुद्गल, पर शोध करें वैज्ञानिक हैं।
''चंदनामती'' चेतन व अचेतन, शक्ति सूत्र ये बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

छठी अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक।।

तत्त्वार्थसूत्र षष्ठम अध्याय में, गुरु ने आश्रव तत्त्व कहा।
आत्मा में कर्मों का आना ही, समझो आश्रव तत्त्व रहा।।
तीनों योगों के द्वारा वे, शुभ-अशुभरूप हैं बन जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ती, शुभ आश्रव मानव कर सकता।
अरु अशुभाश्रव के कारण पर की, निंदा आदिक तज सकता।।
निज भावों के कर्ता धर्ता, ये जीव स्वयं ही कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

हर प्राणी के प्रति मैत्री हो, गुणवानों के गुण ग्रहण करें।
हो दुखियों के प्रति दया भाव, विपरीत में मध्यम भाव धरें।।
''चंदनामती'' ये भाव शुभाश्रव, में कारण माने जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

सप्तम अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

हिंसादिक पापों से विरक्त, होना व्रत कहलाता सच में।
वह अणुव्रत और महाव्रत से, दो रूप कहा जाता जग में।।
मुनि और आर्यिका महाव्रती, श्रावक अणुव्रत को अपनाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

कर्माश्रव से बचने हेतू, तत्त्वार्थसूत्र का पाठ करो।
सप्तम अध्याय के सूत्रों पर, चिन्तन व मनन स्वाध्याय करो।।
भव भव में रोते प्राणी भी, आगे अविनश्वर सुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

जीवन भर व्रत का पालन कर, अंतिम समाधि को ग्रहण करो।
सम्यग्दृष्टि बनकर अतिचार, रहित व्रत संयम ग्रहण करो।।
गुरुमुख से यह प्रवचन सुन कर, ''चंदनामती'' सब तिर जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

अष्टम अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र अष्टम अध्याय में, उमास्वामी जी कहते हैं।
वे बंधतत्व का वर्णन क्रमशः, पाँच हेतु से करते हैं।।
उस कर्मबंध के कारण ही, प्राणी संसारी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

प्रकृती स्थिति अनुभाग प्रदेश, ये चार भेद युत बंध कहा।
आठों कर्मों को इक सौ-अड़तालिस भेदों में पुनः कहा।।
मोहनीय कर्म सब कर्मों का राजा है आगम बतलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

शुभ कर्मों के फल से प्राणी को, सुख की प्राप्ती होती है।
प्राकृतिक रूप से अशुभ कर्म से, दुख की प्राप्ती होती है।।
''चंदनामती'' तत्त्वज्ञानी, सब में समता को अपनाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

नवमीं अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

संवर एवं निर्जरा तत्त्व, नवमी अध्याय में वर्णित हैं।
तत्त्वार्थसूत्र में उमास्वामि के, द्वारा ये उपदेशित हैं।।
आस्रव निरोध संवर व निर्जरा, फल दे कर्म जो खिर जाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

तेरह प्रकार चारित्र से मुनिजन, कर्मों का संवर करते।
उपसर्ग परीषह को सहने से, अशुभ कर्म उनके झड़ते।।
चारों ध्यानों में धर्म-शुक्ल, ध्यानों में स्थिरता पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

निर्ग्रन्थ वीतरागी मुनिवर ही, पूर्ण निर्जरा करते हैं।
स्नातक बन ''चंदनामती'', वे ही मुक्ति श्री वरते हैं।।
योगों की सारी महिमा है, योगी ही अयोगी बन पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

दशवीं अध्याय का भजन

हे वीतराग सर्वज्ञ देव! तुम हित उपदेशी कहलाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।टेक.।।

तत्त्वार्थसूत्र का अपरनाम है, मोक्षशास्त्र माना जाता।
इसकी दशवीं अध्याय के द्वारा, मोक्षतत्व जाना जाता।।
सब कर्म नष्ट करके जिनवर ही, मोक्षधाम को हैं पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।1।।

त्रैलोक्य शिखर पर सिद्धशिला है, मुक्त जीव वहाँ रहते हैं।
संसार में वे न कभी आते, ऐसा जिन आगम कहते हैं।।
धर्मास्तिकाय के बिना सिद्ध, नहिं लोक के आगे जा पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।2।।

है इस अध्याय का सार यही, हम मोक्ष शास्त्र अध्ययन करें।
आचार्य उमास्वामी को हम सब, भक्तिभाव से नमन करें।।
''चंदनामती'' इस ग्रंथ की सब, टीका पढ़ ज्ञानी सुख पाते।
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।3।।

अक्षर-पद-मात्रा-स्वर-व्यंजन, आदिक यदि न्यून कहीं होवें।
साधूजन क्षमा करें उसको, श्री उमास्वामि के शब्दों में।।
यह लघुता ज्ञान की गरिमा है, विनयी जन इसको अपनोत
तव गुणमणि की उपलब्धि हेतु, हम भी प्रभु तेरे गुण गाते।।4।।

पंचपरमेष्ठी की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - चांदनपुर के गाँव में.....

घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।
पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की।।
घृत दीपक.।।टेक.।।

समवसरणयुत अरिहंतों की, सिद्धशिला के सिद्धों की-2
भवदुख नाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।1।।

परमेष्ठी आचार्य उपाध्याय, साधु मोक्षपथगामी हैं-2
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।2।।

मुनिवर ही तो कर्म नाश, अरिहंत-सिद्ध पद पाते हैं-2
कर्म विनाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।3।।

चौबीस जिन जहाँ जन्मे एवं, जहाँ से मोक्ष पधारे हैं-2
उन सब पावन तीर्थ की, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।4।।

देव-शास्त्र-गुरु तीनों जग में, तीन रतन माने हैं-2
आतम निधि के हेतु ही, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।5।।

तीन लोक के जिनमन्दिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं-2
उन सबकी ''चंदनामती'', उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।6।।

पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की-2
घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया,
मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।7।।